ੴ

श्री चौपई साहिब

Benti Chaupai Sahib in Hindi Lyrics

इक ओअंकार श्री वाहेगुरू जी की फतह ॥
पातिसाही दसवीं ॥
कबियो बाच बेनती ॥ चौपई ॥

चौपई १

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥ पूरन होय चित्त की इच्छा ॥
तव चरनन मन रहै हमारा ॥ अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥

चौपई २

हमरे दुष्ट सभै तुम घावहु ॥ आप हाथ दै मोहि बचावहु ॥
सुखी बसै मोरो परिवारा ॥ सेवक सिख्य सभै करतारा ॥२॥

चौपई ३

मो रच्छा निज कर दै करियै ॥ सभ बैरिन कौ आज संघरियै ॥
पूरन होय हमारी आसा ॥ तोरि भजन की रहै प्यासा ॥३॥

चौपई ४

तुमहि छाड कोई अवर न ध्याऊं ॥ जो बर चहों सु तुमते पाऊं ॥
सेवक सिख्य हमारे तारियहि ॥ चुन चुन श्त्रु हमारे मारियहि ॥४॥

चौपई ५

आप हाथ दै मुझै उबरियै ॥ मरन काल का त्रास निवरियै ॥

हूजो सदा हमारे पच्छा ॥ स्री असिधुज जू करियहु रच्छा ॥५॥

चौपई ६

राख लेहु मुहि राखनहारे ॥ साहिब संत सहाय प्यारे ॥

दीनबंधु दुष्टन के हंता ॥ तुमहो पुरी चतुर्दस कंता ॥६॥

चौपई ७

काल पाए ब्रह्मा बपु धरा ॥ काल पाए सिवजू अवतरा ॥

काल पाए कर बिसन प्रकासा ॥ सकल काल का कीया तमासा ॥७॥

चौपई ८

जवन काल जोगी सिव कीयो ॥ बेद राज ब्रह्मा जू थीयो ॥

जवन काल सभ लोक सवारा ॥ नमस्कार है ताहि हमारा ॥८॥

चौपई ९

जवन काल सभ जगत बनायो ॥ देव दैत जच्छन उपजायो ॥

आदि अंत एकै अवतारा ॥ सोई गुरू समझियहु हमारा ॥९॥

चौपई १०

नमस्कार तिस ही को हमारी ॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥

सिवकन को सवगुन सुख दीयो ॥ श्त्रुन को पल मो बध कीयो ॥१०॥

चौपई ११

घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥

चीटी ते कुंचर अस्थूला ॥ सभ पर कृपा दृष्टि कर फूला ॥११॥

चौपई १२

संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधन के सुखी ॥

एक एक की पीर पछानै ॥ घट घट के पट पट की जानै ॥१२॥

चौपई १३

जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तब देह अपारा ॥

जब आकरख करत हो कबहूं ॥ तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥

चौपई १४

जेते बदन सृष्ट सभ धारै ॥ आप आपनी बूझ उचारै ॥

तुम सभ ही ते रहत निरालम ॥ जानत बेद भेद अर आलम ॥१४॥

चौपई १५

निरंकार निर्बिकार निरलंभ ॥ आदि अनील अनादि असंभ ॥

ताका मूढ़ उचारत भेदा ॥ जाको भेव न पावत बेदा ॥१५॥

चौपई १६

ताकौ कर पाहन अनुमानत ॥ महां मूढ़ कछु भेद न जानत ॥

महादेव कौ कहत सदा सिव ॥ निरंकार का चीनत नहि भिव ॥१६॥

चौपई १७

आप आपुनी बुध है जेती ॥ बरनत भिन्न भिन्न तुहि तेती ॥

तुमरा लखा न जाए पसारा ॥ किह बिध सजा प्रथम संसारा ॥१७॥

चौपई १८

एकै रूप अनूप सरूपा ॥ रंक भयो राव कहीं भूपा ॥

अंडज जेरज सेतज कीनी ॥ उतभुज खान बहुर रच दीनी ॥१८॥

चौपई १९

कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमट भयो संकर इकैठा ॥

सगरी सृष्ट दिखाए अचंभव ॥ आद जुगाद सरूप सुयंभव ॥१९॥

चौपई २०

अब रच्छा मेरी तुम करो ॥ सिख्य उबार असिख्य संघरो ॥

दुष्ट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ करो रण घाता ॥२०॥

चौपई २१

जे असिधुज तव सरनी परे ॥ तिन के दुष्ट दुखित ह्वै मरे ॥

पुरख जवन पग परे तिहारे ॥ तिन के तुम संकट सभ टारे ॥२१॥

चौपई २२

जो कल कौ इक बार धिऐहै ॥ ता के काल निकट नहि ऐहै ॥

रच्छा होय ताहि सभ काला ॥ दुष्ट अरिष्ट टरे तत्काला ॥२२॥

चौपई २३

कृपा दृष्ट तन जाहि निहरिहो ॥ ताके ताप तनक महि हरिहो ॥
रिद्ध सिद्ध घर मों सभ होए ॥ दुष्ट छाह छै सकै न कोए ॥२३॥

चौपई २४

एक बार जिन तुमैं संभारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥
जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुष्ट दोख ते रहा ॥२४॥

चौपई २५

खड़ग केत मैं सरन तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी ॥
सरब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुष्ट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥

चौपई २६

कृपा करी हम पर जग-माता ॥ ग्रंथ करा पूरन सुभ राता ॥
किलविख सकल देह को हरता ॥ दुष्ट दोखीअन को छै करता ॥२६॥

चौपई २७

श्री असिधुज जब भए दयाला ॥ पूरन करा ग्रंथ तत्काला ॥
मन बाँछत् फल पावे सोई ॥ दूख न तिसै ब्यापत कोई ॥२७॥

अड़िल्ल

सुनै गुंग जो याहे सो रसना पावई ॥ सुनै मूढ़ चित्त लाए चतुरता आवई ॥
दूख दर्द भौ निकट ना तिन नर कै रहै ॥ हो जो याकि एक बार चौपई को कहै ॥

चौपई २९

संबत सत्रह सहस भणिजै ॥ अर्ध सहस फुन तीन कहिजै ॥

भाद्रव सुदी अष्टमी रविवारा ॥ तीर सतुद्रव ग्रंथ सुधारा ॥२९॥

सवैया

पांय गहे जब ते तुमरे तब ते कोउ आँख तरे नहीं आनयो ॥

राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥

सिमृत सास्त्र बेद सभे बहु भेद कहैं हम एक न जानयो ॥

श्री असिपान कृपा तुमरी कर, मैं न कहयो सभ तोहे बखानयो ॥

दोहरा

सगल दुआर कौ छाड कै, गहयो तुहारो द्वार ॥

बाँहे गहे की लाज अस, गोबिन्द दास तुहार ॥

वाहेगुरु जी का खालसा ॥

वाहेगुरु जी की फ़तह ॥